मम्मा सॉग

(तर्ज़ - मेरे परमपिता परमात्मा, सदाशिव निराकार, ओ आनंद के सागर..)

मेरी मातेश्वरी, जगदम्बा, तुझ में ही प्यार अपार

ओ शिव स्वरूपा, जगजननी, गुणों की तू भंडार

तुझको करते याद, हम तुझको करते याद

मेरी मातेश्वरी जगदम्बा .....

1. सेकेंड में हुआ निश्चय, चुना पीतांबर कृष्णा को

खुद को करके समर्पण, छोड़ा झूठी दुनिया को

ओम राधे से बनी अनुराधे -2, बनी यज्ञ की आधार

तुझको करते याद, हम तुझको करते याद

मेरी मातेश्वरी जगदम्बा .....

2. ज्ञान का किया वो मंथन, जन-जन में लाई जागृति

तू ही पवित्रा, शीतला तू ही, दूर करते हर विकृति

लक्ष्मी बन ज्ञान धन लुटाती - 2, किया वो आत्मसात

तुझको करते याद, हम तुझको करते याद

मेरी मातेश्वरी जगदम्बा .....

3. अपने गुणों से बनी मम्मा, यज्ञ को चलाती ममतामयी

हांजी के पाठ सदा पढ़ाती, मुरली सुनाती जादूमयी

अपने पुरुषार्थ और कर्मों से - 2, नंबर वन किया प्राप्त

तुझको करते याद, हम तुझको करते याद

मेरी मातेश्वरी जगदम्बा .....

4. कर्मभोग को कर्मयोग से, चुक्तू करती मुस्काती

अन्तिम दिन भी अंगूर खिलके, छाप छोड़ी वो ममतामयी

करते आह्वान हम तेरा - 2, कर दो माँ स्वीकार

तुझको करते याद, हम तुझको करते याद

मेरी मातेश्वरी, जगदम्बा, तुझ में ही प्यार अपार

ओ शिव स्वरूपा, जगजननी, गुणों की तू भंडार

तुझको करते याद, हम तुझको करते याद !

OM SHANTI